

## समाजवाद महामारी को हराएगा या फिर महामारी समाजवाद को : 17वाँ न्यूज़लेटर (2020)

Ελληνικά



हा मन थंग, स्मृति संख्या 1 नहीं, 2009

प्यारे दोस्तों,

ट्राईकॉन्टेनेटल : सामाजिक शोध संस्थान की ओर से अभिवादन।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) का कहना है कि ये बड़ा लॉकडाउन, जो कि न जाने कब खत्म होगा, 2020 और 2021 के कुल वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 90 खरब डॉलर के नुक़सान का कारण बन सकता है ; यह संख्या जापान और जर्मनी की संयुक्त अर्थव्यवस्थाओं से ज्यादा है। IMF की प्रबंध निदेशक क्रिस्टालिना जॉर्जीवा का मानना है कि ये परिदृश्य 'हो सकता है वास्तविकता की एक आशावादी तस्वीर ही हो।'

यूरोप के अंदर क़ज़ों को म्युचुअल बनाने की माँग उठ रही है, दुनिया भर में करों को विलंबित करने की माँग हो रही है, और IMF पर विशेष निकासी अधिकार (SDRs) के खरबों डॉलर जारी करने की माँग भी की जा रही है। लेकिन पुरानी

आदतें जाती नहीं। जर्मनी और नीदरलैंड दक्षिणी यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं के कऱ्ज माफ़ नहीं करना चाहते, और अमेरिकी राजकोष व लेनदार SDR की राशि जारी करने के इच्छुक नहीं हैं। बल्कि, इस भयावह महामारी के दौरान, संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) में वित्तीय योगदान रोक दोने का फैसला किया है।

दुनिया भर में अब 20 लाख से भी ज्यादा लोग SARS-CoV-2 से संक्रमित हो चुके हैं, और मौत के आँकड़े लगातार बढ़ रहे हैं, आशावादी रहने की मानवीय क्षमताओं पर वज्रपात हो गया है।

लेकिन उम्मीद की किरणें आती हैं, मुख्यतः दुनिया के उन हिस्सों से जो समाजवाद के लिए प्रतिबद्ध हैं। जनवरी के आखिर में, जब वुहान (चीन) से आ रही खबरों पर दुनिया के अधिकांश देश ध्यान नहीं दे रहे थे, तब वियतनाम के प्रधानमंत्री गुयेन जून्ना फुक ने एक टीम बुनाई और वायरस के प्रसार से निपटने के उपाय करने शुरू कर दिए। उन्होंने कहा कि 'महामारी से लड़ना दुश्मन से लड़ने जैसा है।' वियतनाम की सरकार ने उन लोगों का पता लगाना शुरू कर दिया जो संक्रमित हो सकते थे, उनके सम्पर्क में आने वालों का परीक्षण किया, उनके संपर्क में आए लोगों को क्वारंटाइन किया, और आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए सेवानिवृत्त डॉक्टरों और नर्सों सहित पूरा चिकित्सा प्रतिष्ठान जुटा दिया। वियतनाम की सैन्य चिकित्सा अकादमी और वियत ए कॉर्पोरेशन ने WHO के दिशानिर्देशों के आधार पर एक कम लागत वाली परीक्षण किट तैयार की, ताकि सरकार बीमारी के लक्षण वाले लोगों का परीक्षण शुरू कर सके। खास तौर से सरकार जनता को जैनोफोबीया (नफरत फैलाने वाली सूचनाओं) के खिलाफ़ सचेत करती रही। वियतनाम के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ ऑक्यूपेशनल सेफ्टी एंड हेल्थ ने वायरस पर और बुनियादी स्वच्छता के बारे में सार्वजनिक जानकारी देने के लिए एक गीत और वीडियो जारी किया। अभियान का ये तरीका इसके बाद कई जगह अपनाया गया।

वीडियो: Ghen Cô Vy, फ़रवरी 2020.

वियतनाम में COVID-19 से अब तक कोई मौत नहीं हुई है।

पिछले हफ्ते, वियतनाम ने संयुक्त राज्य अमेरिका को 450,000 सुरक्षात्मक सूट और फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्पेन, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका को 750,000 मास्क भेजे हैं। हमारी जीवित स्मृति में ही, संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपने यूरोपीय सहयोगियों की सहायता के साथ वियतनाम पर रासायनिक हथियारों (नापाल्म और एंजेट औरेंज) सहित साढ़े सात लाख टन विस्फोटक गिराए थे। उन परमाणु बमों की शक्ति से 100 गुना ज्यादा जो अमेरिका ने जापान पर गिराए थे। इन विस्फोटकों ने वियतनाम के समाज को तहस-नहस कर दिया था और कई पीढ़ियों के लिए वहाँ की कृषि भूमि को झहरीला बना दिया था। फिर भी, यह वियतनाम है जिसकी सरकार और लोगों ने वायरस से निपटने के लिए विज्ञान और सार्वजनिक कार्रवाई का उपयोग किया, और संयुक्त राज्य अमेरिका को, जहाँ विज्ञान और सार्वजनिक कार्यों की अनुपस्थिति से समाज बेबस है, एकजुटता में उपकरण भेज रहा है।

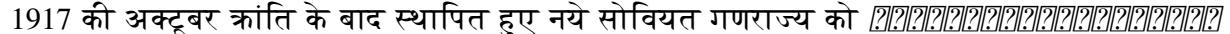


व्लादिमीर लेबेदेव, कल और आज, 1928

सौ साल पहले, 1918-19 में, प्रथम विश्व युद्ध के दौरान यूरोप के युद्धक्षेत्रों में/से सैनिकों को लाने/ ले जाने वाले जहाजों के द्वारा फैली इन्फ्लूएंज़ा महामारी ने दुनिया को तबाह कर दिया था। कम-से-कम 5 करोड़ लोग इस महामारी की चपेट

में आए थे, जिसे गलत तरीके से स्पैनिश फ्लू कहा जाने लगा (जबकि वायरस का पता पहली बार मार्च 1918 में अमेरिका के कंसास में चला था)। इससे पहले भी 1889-90 में ये महामारी आई थी। कहा जाता है कि उसका प्रसार समुद्र में और ज़मीन पर चलने वाले भाप के परिवहनों द्वारा मनुष्यों के सफर में बढ़ी गति के चलते तेज़ी से हुआ। 1889-90 के इन्फ्लूएंज़ा से मुख्य रूप से बच्चों और बुजुर्गों की मौतें हुई थीं, लेकिन 1918-19 के इन्फ्लूएंज़ा से बड़े पैमाने पर युवा वयस्कों की भी मौत हुई, हालाँकि इसके कारण अब तक पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं।

कवि आइजैक रोसेनबर्ग के शब्दों में, मिट्टी, जूँओं और सरसों गैस की खौफनाक खाइयों में ‘अपनी जवानी का उत्साही रस खपा चुके’ सैनिकों को अपने घरों में संक्रामक फ्लू का सामना करना पड़ा था। युद्ध समाप्त होते ही, युद्ध में शामिल देशों ने लीग ऑफ नेशंस की स्थापना की और टाइफस आयोग का निर्माण किया; जिसका नाम जल्द ही बदलकर महामारी आयोग रख दिया गया। रोग युद्ध का क्रीबी रिश्तेदार था। टाइफस, टाइफाइड, पेचिश, चेचक, हैजा, इन्फ्लूएंज़ा जैसी बीमारियाँ युद्ध से लौटे सैनिकों के बीच ही फैलना शुरू होती थीं। महामारी आयोग ने पॉलैंड का दौरा किया, बीमारियों को आगे फैलने से रोकने के लिए आयोग ने कॉर्डन सैनिटरी (स्वास्थ्य-संबंधी घेराबंदी) लागू करने की सिफारिश की और सरकार के साथ मिलकर आपातकालीन अस्पताल और पॉली-क्लीनिक बनाने का काम किया। यही आयोग था जो लीग [ऑफ नेशंस] के स्वास्थ्य संगठन के रूप में बदल गया, और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) बना।

1917 की अक्टूबर क्रांति के बाद स्थापित हुए नये सोवियत गणराज्य को  या ‘स्पेनिश रोग’ कही जाने वाली महामारी का प्रकोप सहना पड़ा। 1918 के अंत तक सोवियत संघ में प्रति सप्ताह रोग-पीड़ितों के 150 मामले सामने आने लगे थे; हालाँकि यह टाइफस जितनी बड़ी समस्या नहीं थी, जिसके हर हफ्ते 1000 मामले अस्पतालों में आते थे। जूँ से होने वाले टाइफस के बारे में लेनिन ने कहा था कि, ‘या तो समाजवाद जूँओं को हरा देगा, या जूँएँ समाजवाद को हरा देगी।’ नये सोवियत गणराज्य को एक जर्जर चिकित्सा प्रणाली और ग्रीष्म व कमज़ोर स्वास्थ्य वाली आवादी विरासत में मिली थी। गृहयुद्ध, बीमारी और अकाल से समाज के टूटने का खतरा लगातार बना हुआ था। इन्हीं कारणों से सोवियत गणराज्य ने जल्दी ठोस काम करने शुरू किए थे :

**सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक कमिसारियत बनाया:** 21 जुलाई 1918 को सोवियत गणराज्य ने विभिन्न स्वास्थ्य एजेंसियों को केंद्रीकृत किया और निकोलाई सेमाश्को को इस केंद्रीय विभाग का प्रभारी बनाया। यह दुनिया का पहला ऐसा संस्थान था (यहाँ तक कि अमेरिका में भी 1953 तक स्वास्थ्य विभाग नहीं बना था)। कमिसारियत की ज़िम्मेदारी थी कि स्वास्थ्य-देखभाल सबका अधिकार बने, कुछ लोगों का विशेषाधिकार नहीं। इसलिए, चिकित्सा-देखभाल मुफ्त की गई।

**स्वास्थ्य क्षेत्र का विस्तार और लोकतंत्रीकरण:** सोवियत गणराज्य ने जल्द अस्पताल और पॉलीक्लिनिक्स बनाए, डॉक्टरों और सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों को प्रशिक्षित किया और चिकित्सा स्कूलों तथा बैक्टीरियोलॉजिकल संस्थानों का विस्तार किया। पेट्रोग्रेड कम्यून के सार्वजनिक स्वास्थ्य के कमिशनर डॉ. ई. पी. पर्वुखिन ने 1920 में कहा कि ‘दवाओं के लिए नये कारखाने स्थापित किए गए हैं, और सट्टेबाजों से दवाओं के बड़े स्टॉक जब्त किए गए हैं।’ मुनाफ़े के मकसद को चिकित्सा क्षेत्र से हटा दिया गया था।



सोवियत बजट के वितरण का वर्णन करने के लिए लिथोग्राफ़, 1930

**जनता को लामबंद किया:** स्वास्थ्य देखभाल केवल डॉक्टरों और नसों के हाथों में नहीं छोड़ी जा सकती थी। सेमाश्को ने स्वस्थ-समाज बनाने के संघर्ष में श्रमिकों और किसानों को लामबंद करना ज़रूरी समझा। 1918 में शहरों और गाँवों में महामारी रोकथाम हेतु श्रमिक समितियों की स्थापना की गई। इन समितियों के प्रतिनिधि-श्रमिक व किसान-खुद से लोगों को स्वास्थ्य और स्वच्छता पर वैज्ञानिक जानकारी देते थे और सुनिश्चित करते थे कि सार्वजनिक स्नान (बॉन्यस) साफ़ के साथ हों। यह सुनिश्चित करने के लिए कि बीमारी का कोई संकेत मिलने पर पेशेवर चिकित्सा-देखभाल ही उपलब्ध कराई जाए, वे अपने समुदायों की निगरानी करते थे। 1920 में सेमाश्को ने लिखा, 'हम बिना अतिशयोक्ति के कह सकते हैं कि टाइफस और हैज़ा की महामारियों को मुख्य रूप से कामगारों और किसानों की समितियों की सहायता से ही रोका जा सका।' सार्वजनिक कार्रवाई (पब्लिक एक्शन) सोवियत स्वास्थ्य प्रणाली का एक अभिन्न अंग थी।

**रोग-निवारण के उपाय मज्जबूती से लागू किए:** सोवियत के सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों का मानना था कि ज्यादा संसाधन रोग-निवारण के उपायों में लगाए जाने चाहिए। इन उपायों में सार्वजनिक स्वास्थ्य निर्देश जारी करना और श्रमिकों व किसानों के रहन-सहन की स्थिति में सुधार करना शामिल था। डॉ. पर्वुखिन ने 1920 में एक नॉर्वेजियन पत्रकार से कहा कि 'सोवियत गणराज्य में, सभी आवास सरकारी हैं, इसलिए अब कोई भी स्वास्थ्य की नज़र से उतनी ख़तरनाक जगहों पर नहीं रहता जैसे पुराने शासन में कई लोगों को रहना पड़ता था। अनाज पर हमारे एकाधिकार के चलते, खाद्य पदार्थों की गारंटी सबसे पहले बीमार और कमज़ोर लोगों को दी जाती है।' जीने की बेहतर स्थिति और चिकित्सीय

देखभाल की लगातार उपलब्धता, बीमारी के प्रसार को रोकने में सक्षम हुई।

इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि डॉ. पर्वुखिन ने कहा था कि ‘हमने स्पैनिश इनफ्लूएंज़ा का सामना पश्चिमी दुनिया से बेहतर तरीके से किया।’ इन शब्दों को पढ़ते हुए, आज वियतनाम और केरल, चीन और क्यूबा द्वारा कोरोनावायरस का सामना करने के लिए अपनाएं जा रहे तरीके परिचित से लगते हैं। ये समाजवादी व्यवस्था और पूँजीवादी व्यवस्था के बीच की खाई को रेखांकित करते हैं। एक व्यवस्था जन-हित को मुनाफ़े से ऊपर रखती है और दूसरी केवल मुनाफ़े से प्रेरित है USA के साउथ डकोटा में स्मिथफ़ील्ड पोर्क प्लांट ने उनके उत्पादन क्षेत्रों में COVID-19 के कई मामले सामने आने के बाद भी प्लांट बंद करने से इंकार कर दिया और प्लांट के श्रमिकों पर काम पर आते रहने का दबाव डाला। जाहिर है श्रमिकों के पास ज्यादा विकल्प नहीं हैं। इसके बारे में जेसिका लुसेनहॉप की मार्मिक कहानी महामारी की सूरत में भी पूँजीवादी व्यवस्था की [मुनाफ़े की] बाध्यताओं पर बात करती है। स्मिथफ़ील्ड के एक श्रमिक टिम ने कहा कि COVID-19 हो या न हो, उन्हें काम करना पड़ता है क्योंकि ‘मुझ पर चार बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी है। इस बेतन से ही हमारे सर पर छृत रहती है।’



IDEAS  
EN  
LA  
BATALLA

BATALLA DE  
**IDEAS**

expressão  
POPULAR

tricontinental

LeftWord

## लेनिन 150 का आवरण

बुधवार, 22 अप्रैल को लेनिन के जन्मदिन की 150 वीं वर्षगांठ थी। ट्राईकॉन्टिनेटल : सामाजिक शोध संस्थान व तीन प्रकाशन संस्थाओं (भारत में लेफ्टवर्ड बुक्स, ब्राजील में एक्सप्रेसो पॉपुलर, अर्जेंटीना में बटाला डे आइडियाज़) ने इस अवसर पर एक मुफ्त ऑनलाइन पुस्तक जारी की। अंग्रेज़ी, पुर्तगाली और स्पैनिश में उपलब्ध इस किताब में लेनिन द्वारा मार्क्स के बारे में 1913 में लिखा गया निबंध, लेनिन के बारे में मायाकोवस्की द्वारा 1924 में लिखा महाकाव्य और लेनिन के सिद्धांत और प्रैक्सिस (सिद्धांत तथा व्यवहार का पारस्परिक अंत :संबंध) पर मेरे द्वारा लिखा गया एक छोटा निबंध शामिल है।



24 मार्च को केन्याई लेखक न्यूगी वा थीयोंग ने 'अंधेरे की सुबह' नाम से एक कविता लिखी। यह उन्होंने अपने पड़ोसी जेनेट डिविसेनो के लिए और मुकोमा वा नूगी (कॉर्नल यूनिवर्सिटी) तथा नवीन किशोर (सीगल बुक्स, कोलकाता, भारत) द्वारा दिए गए उपहार के जवाब में लिखी थी। कुछ दिनों बाद उन्होंने हमारे साथ ये उपहार-समान अपनी कविता साझा की।

मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ,  
यह इंसानी रिश्तों के सामान्य संकेतों को खतरे में डाल रहा है  
हाथ मिलाना,  
गले लगाना,  
एक दूसरे को रोने के लिए अपने कंधे देना  
पड़ोसी-प्रेम को, तथ्य मानकर चलना  
इतना कि हम अक्सर अपनी छातियाँ पीटते हैं  
चीखते हुए निष्ठुर व्यक्तिवाद के बारे में,  
प्रकृति का तिरस्कार करते हुए, उस पर भी ज़हर उगलते हैं, और  
यह दावा करते हुए कि संपत्ति में व्यक्तिवाद के सारे कानूनी अधिकार हैं  
आभार व्यक्त करते हैं पूँजी के देवताओं में हमारे हिस्सों के लिए।

ओह, अब मैं कितना चाहता हूँ कि मैं अंग्रेजी में कविता लिख पाता,  
या किसी एक अथवा हर उस भाषा में जो तुम बोलते हो  
और साझा कर पाता तुम्हारे साथ, शब्द जो  
वांजिको, मेरी यीकोजो माँ, मुझे कहा करती थी :  
गुतिरितुकूताकिया :  
कोई रात इतनी स्याह नहीं होती कि,  
वो खत्म नहीं होगी दिन में,  
या सीधे शब्दों में कहूँ तो,  
हर रात खत्म हो जाती है भौर के साथ।  
गुतिरितुकूताकिया ।

ये अंधेरा भी बीत जाएगा  
हम बार-बार मिलेंगे  
और अंधेरे और सवेरे के बारे में बात करेंगे  
गाएँगे हँसेंगे और शायद गले भी मिलेंगे  
प्रकृति और लालन एक हरे आलिंगन में बंद  
जश्न माना रहे हैं एक सामान्य अस्तित्व की हर धड़कन का  
जो सही मायने में फिर से खोजा और पोसा जा रहा है  
अंधेरे की रौशनी और नयी सुबह में।

यह अंधेरा भी बीत जाएगा। जो रौशनी हमारा स्वागत कर रही है, वह जैसा कि न्यूगी ने लिखा है, पुरानी रौशनी नहीं बल्कि एक नयी सुबह होगी।

स्नेह-सहित,

विजय।